2 दिसम्बर 2008, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जब वीतरागी सर्वज्ञदेव का अभाव हो, वीतरागी संतों के भी दर्शन दुर्लभ हो जावें; तब शास्त्र-साहित्य ही एकमात्र शरण है।

ह्न सत्य की खोज : पृष्ठ ह्न 74

वर्ष : 31, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित

अभूतपूर्व होगी बुंदेलखंड तीर्थयात्रा

(रविवार, 7 दिसम्बर 2008 से रविवार, 14 दिसम्बर 2008 तक)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडेरशन द्वारा आयोजित वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ की बुंदेलखण्ड के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की तैयारियाँ जोरों से चल रही है। इस अवसर पर यात्रा संघ के भव्य स्वागत के लिये पूरा बुंदेलखण्ड उत्साहित है। यात्रा के मार्ग में पड़ने वाली एवं निकटवर्ती स्थानों की फैडरेशन की शाखायें, मुमुक्षु मंडल एवं समाज के प्रतिष्ठित महानुभव सभी यात्रा संघ की अगवानी के लिये तत्पर हो रहे हैं। स्थान - स्थान पर विद्वानों एवं तीर्थयात्रियों के स्वागत की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही हैं।

यात्रा में 7 दिनों में 20 तीर्थक्षेत्रों के लगभग 307 जिनालयों की वंदना का लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा संघ की टीम ने यात्रियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हुये आरामदायक यात्रा के लिये 2 X 2 पुश बैक डीलक्स बसों, गुजराती/उत्तर भारतीय स्वादानुसार स्वादिष्ट भोजन एवं अल्पाहार की उत्तम व्यवस्था भी की है।

यात्रियों को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध उपयुक्त आवास की सुन्दरतम एवं सुविधायुक्त व्यवस्था व देखभाल के लिये तथा सामान उठाने-रखने हेतु सेवक, सुरक्षा हेतु सुरक्षाकर्मी, मेडिकल सुविधा के लिये एम्बूलेंस, मेडिकल किट, सुरक्षा एवं निश्चिन्तता के लिये ट्रेवल इन्श्योरेन्स की व्यवस्था की गई है। संघ के साथ फोटोग्राफर/वीडियोमेन साथ रहेगा।

यात्रा की पूरी वीडियो, फोटोज यात्रा के बाद स्मृतियों की जीवन्त रखने के लिये उपहारस्वरूप सभी यात्रियों को उनके घर भेजेंगे ही; यदि वे अपनी व्यक्तिगत फोटोज भी खिंचवाना चाहें तो उसकी सुविधा भी रहेगी।

इसके अलावा यात्रा की संपूर्ण जानकारी एवं आवश्यक सामग्री से युक्त आकर्षक गिफ्ट किट भी यात्रियों को देने के लिये तैयार हो चुके हैं।

सुरक्षा एवं परिचय की दृष्टि से यात्रासंघ द्वारा यात्रियों के सुन्दर परिचयपत्र एवं लगेज टेग तैयार करवाये गये हैं।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त

(शेष पृष्ठ-३ पर...)

सिद्धायतन द्रोणगिर में डॉ. भारिल्ल का नागरिक अभिनन्दन

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्रोणगिर द्वारा मुमुक्षु समाज के शिरोमणि विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के द्रोणगिरी पधारने के अवसर पर उनके नागरिक अभिनन्दन का कार्यक्रम श्रीमंत सेठ डालचंदजी जैन सागर की अध्यक्षता में रविवार, दिनांक 14 दिसम्बर को सिद्धायतन द्रोणगिर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर क्षेत्रीय समस्त मुमुक्षु मंडलों के द्वारा भी उनका अभिनन्दन किया जायेगा।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की ललितपुर में हीरक जयन्ती

यात्रा के दौरान ही बड़े दादा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की 76वीं सालगिरह के अवसर पर मुमुक्षु मंडल ललितपुर द्वारा 11 दिसम्बर को शाम 7 बजे हीरक जयन्ती का अपूर्व कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर उनका भव्य स्वागत /सम्मान सभी यात्रियों, मुमुक्षु मंडलों, फैडरेशन की शाखाओं एवं समाज के प्रतिष्ठितजनों द्वारा किया जायेगा।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण
प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक पर

सम्पादकीय –

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु (19)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जिसप्रकार जिनका शारीरिक स्वास्थ्य कमजोर होता है, उन्हें ठंडी और गरम दोनों प्रकार की हवाएँ परेशान करती हैं, गरम हवा में उन्हें लू लग जाती है और ठंडी हवा से जुखाम हो जाता है; उसीप्रकार जिनका आत्मिक स्वास्थ्य कमजोर होता है, उन्हें निन्दा और प्रशंसा दोनों ही परेशान करते हैं। निन्दा की गरम हवा लगने से उन्हें क्रोध की लू लग जाती है और प्रशंसा की ठंडी हवा लगने से मान का जुखाम हो जाता है।

जो पर को अपना माने उसे मुख्यतः मान होता है। अतः मान छोड़ने के लिए पर को अपना मानना छोड़ना होगा। पर को अपना मानना छोड़ने का अर्थ यह है कि निज को निज और पर को पर जानना होगा, दोनों को भिन्न–भिन्न स्वतंत्र सत्तायुक्त पदार्थ मानना ही पर को अपना मानना छोड़ना है, ममत्वबुद्धि छोड़ना है।

पर से ममत्वबुद्धि छोड़नी है और रागादि भावों में उपादेयबुद्धि छोड़नी है। इनके छूट जाने पर मुख्यतः मान उत्पन्न ही न होगा, विशेषकर अनन्तानुबन्धी मान तो उत्पन्न ही न होगा। चारित्र–दोष और कमजोरी के कारण अप्रत्याख्यानादि मान कुछ काल तक रहेंगे, पर वे भी इसी ज्ञान–श्रद्धान के बल पर होने वाली आत्मलीनता से क्रमशः क्षीण होते जावेंगे और एक दिन ऐसा आयेगा कि मार्दवस्वभावी आत्मा पर्याय में भी पूर्ण मार्दवधर्म से युक्त हो जायगा, मानादि का लेश भी न रहेगा।

३. उत्तमआर्जव के स्वरूप के स्पष्टीकरण में कहा ह्न क्षमा और मार्दव के समान ही आर्जव भी आत्मा का स्वभाव है। आर्जवस्वभावीहै ही, उसे आत्मा के आश्रय से आत्मा में छल–कपट मायाचार के अभावरूप शान्ति–स्वरूप जो स्वभाव पर्याय प्रकट होती है, उसे भी आर्जव कहते हैं। यद्यपि आत्मा आर्जवस्वभावी है, तथापि अनादि से ही आत्मा में आर्जव के अभावरूप मायाकषायरूप विभाव पर्याय ही प्रकट रूप से विद्यमान है।

मायाचारी की प्रवृत्ति पं. टोडरमलजी ने इसप्रकार बताई है ह्न

''जब इसके मायाकषाय उत्पन्न होती है, तब छल द्वारा कार्य सिद्ध करने की इच्छा होती है। उसके अर्थ अनेक उपाय सोचता है, नाना प्रकार कपट के वचन कहता है, शरीर की कपाटरूप अवस्था करता है, बाह्यवस्तुओं को अन्यथा बतलाता है तथा जिनमें अपना मरण जाने ऐसे भी छल करता है। कपट प्रकट होने पर स्वयं का बहुत बुरा हो, मरणादि हो, उनको भी नहीं गिनता। तथा माया होने पर किसी पूज्य व इष्ट का भी सम्बन्ध बने तो उनसे भी छल करता है, कुछ विचार नहीं रहता। यदि छल द्वारा कार्य सिद्धि न हो तो स्वयं बहुत संतापवान होता है, अपने अंगों का घात करता है तथा विष आदि से मर जाता है ह्न ऐसी अवस्था माया होने पर होती है।''

मायाचारी व्यक्ति अपने सब कार्य मायाचार से ही सिद्ध करना चाहता है। वह यह नहीं समझता कि काठ की हांडी दो बार नहीं चढ़ती। एक बार मायाचार प्रकट हो जाने पर जीवनभर को विश्वास उठ जाता है। धोखा–धड़ी से कभी–कभी और किसी–किसी को ही ठगा जा सकता है, सदा नहीं और सबको भी नहीं।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि लौकिक कार्यों की सिद्धि मायाचार से नहीं, पूर्व पुण्योदय से होती है और पारलौकिक कार्य की सिद्धि में पाँचों समवायों के साथ पुरुषार्थ प्रधान है।

कार्यसिद्धि के लिए कपट का प्रयोग कमजोर व्यक्ति करता है। सबल व्यक्ति को अपनी कार्यसिद्धि के लिए कपट की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। उसकी प्रवृत्ति तो अपने जोर के जरिये कार्य सिद्ध करने की रहती है। आर्जव के साथ लगा उत्तम शब्द सम्यग्दर्शन का सूचक है। 'ऋजुता अर्थात् सरलता का भाव आर्जव है। सामान्यतया माया कषाय के अभाव को आर्जव कहते हैं। विशेषरूप से जो मुनि मन में कुटिल चिन्तवन नहीं करता, कुटिल कार्य नहीं करता, कुटिल वचन नहीं बोलता और अपने दोषों को नहीं छिपाता, वह उत्तम आर्जवधर्म का धारी है।' 'योगों का वक्र न होना आर्जव है।'

४. उत्तमशौच को समझाते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न शुचिता का भाव शौच है। सामान्यतया लोभ कषाय के अभाव का नाम शौच है। शौच के साथ लगा उत्तम विशेषण सम्यग्दर्शन का सूचक है। विशेषरूप से सभी प्रकार के विकारों की अपवित्रता से आत्मा को दूर रखना उत्तम शौच धर्म है। शौचधर्म की विरोधी लोभकषाय मानी गई है। लोभ को पाप का बाप कहा जाता है, क्योंकि जगत में ऐसा कौनसा पाप है जिसे लोभी न करता हो। लोभी क्या नहीं करता? उसकी प्रवृत्ति जैसे भी हो, येन–केन–प्रकारेण धनादि भोग–सामग्री इकट्ठी करने की ही रहती है।

लोभी व्यक्ति का चित्रण पं. टोडरमलजी ने इसप्रकार किया है ह्न

''जब इसके लोभकषाय उत्पन्न हो तब इष्ट पदार्थ के लाभ की इच्छा होने से, उसके अर्थ अनेक उपाय सोचता है। उसके साधनरूप वचन बोलता है, शरीर की अनेक चेष्टा करता है, बहुत कष्ट सहता है, सेवा करता है, विदेश गमन करता है; जिसमें मरण होना जाने वह कार्य भी करता है। जिनमें बहुत दुःख उत्पन्न हो ऐसे आरंभ करता है। तथा लोभ होने पर पूज्य व इष्ट का भी कार्य हो, वहाँ भी अपना प्रयोजन साधता है, कुछ विचार नहीं रहता तथा जिस इष्ट वस्तु की प्राप्ति न हो या इष्ट का वियोग हो तो स्वयं बहुत संतापवान होता है, अपने अंगों का घात करता है तथा विष आदि से मर जाता है। ऐसी अवस्था लोभ होने पर होती है।''

'जो परम मुनि इच्छाओं को रोककर और वैराग्यरूप विचारों से युक्त होकर आचरण करता है, उसको शौचधर्म होता है।'

'प्रकर्ष प्राप्त लोभ का त्याग करना शौचधर्म है।'

५. उत्तमसत्य का प्रतिपादन करते हुए आचार्य कहते हैं कि ह्न उत्तमसत्य का प्रतिपादन करते हुए आचार्य कहते हैं कि ह्न द्रव्य का लक्षण सत् है। आत्मा भी एक द्रव्य है, अतः वह सत्स्वभावी है।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरी, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित प्रदीपजी झाँझरी उज्जैन, पण्डित मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त होगा।

सम्पूर्ण यात्रा के दौरान प्रवचन, पूजन–विधान, भक्ति आदि कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

इसप्रकार यात्रा संघ की पूरी टीम यात्रा को भव्यतम और ऐतिहासिक बनाने के लिये रात–दिन मेहनत कर रही है।

यात्रा का शुभारंभ सोनागिर से

बुन्देलखंड यात्रा का उद्घाटन 8 दिसम्बर भव्य शोभायात्रा के साथ कुन्दकुन्द नगर से होगा, सभी तीर्थयात्री गाजते–बाजते लवाजमें के साथ शोभायात्रा के रूप में पर्वतराज पर वंदना के लिये पहुँचेंगे; जहाँ पर चंद्रप्रभ जिनालय में संगीत के साथ भक्ति पूजन होगी।

भव्य समापन सिद्धायतन द्रोणगिर में

14 दिसम्बर को तीर्थधाम सिद्धायतन में यात्रा का समापन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का नागरिक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया है, जिसमें सभी यात्रियों को आकर्षक मोमेन्टो भेंट किया जायेगा तथा यात्री अपने अनुभव भी बतायेंगे।

(पृष्ठ 2 का शेष ...)

सत्स्वभावी आत्मा के आश्रय से आत्मा में जो शान्तिस्वरूप स्वभाव पर्यायें प्रगट होती है, उसे निश्चय सत्यधर्म कहते हैं। सत्य के साथ लगा 'उत्तम' शब्द मिथ्यात्व के अभाव और सम्यग्दर्शन की सत्ता का सूचक है। मिथ्यात्व के अभाव बिना तो सत्यधर्म की प्राप्ति ही संभव नहीं है।

जबतक यह आत्मा आत्मवस्तु का सत्यस्वरूप नहीं समझेगा, तबतक सत्यधर्म की उत्पत्ति संभव नहीं है। जिसकी उत्पत्ति ही न हुई हो, उसकी वृद्धि का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आत्मवस्तु की सच्ची समझ आत्मानुभव के बिना सम्भव नहीं है।

सत्य बोलना तो निश्चय से सत्यधर्म है ही नहीं, पर मात्र सत्य जानना, सत्य मानना भी वास्तविक सत्यधर्म नहीं है; क्योंकि मात्र जानना और मानना क्रमशः ज्ञान और श्रद्धा गुण की पर्यायें हैं; जबकि सत्यधर्म चारित्र गुण की पर्याय है, चारित्र की दशा है।

अतः सत्यवाणी की बात तो दूर, मात्र सच्ची श्रद्धा और सच्ची समझ भी सत्यधर्म नहीं; किन्तु सच्ची श्रद्धा और सच्ची समझपूर्वक उत्पन्न हुई वीतराग परिणति ही निश्चय से उत्तमसत्यधर्म है।

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान के साथ प्रगट होनेवाली चारित्रगुण की निर्मल पर्याय, वीतराग परिणति ही सत्यधर्म है। जो मुनि जिनसूत्र ही के वचन को कहे। असमर्थ हो तो भी अन्यथा नहीं कहें वह मुनि सत्यवादी है, उसको **उत्तम सत्यधर्म** होता है। **(क्रमशः)**

बुन्देलखण्ड यात्रा का कार्यक्रम

7 व 8 दिसम्बर (पहला व दूसरा दिन)

दोनों दिन सोनागिर में दर्शन, पूजन, प्रवचन, भक्ति।

9 दिसम्बर (तीसरा दिन)

प्रात:	9:45 बजे	करगुआ दर्शन
	11:45 बजे	पवा दर्शन
दोपहर	3:15 बजे	गोलाकोट दर्शन
	4:30 बजे	खनियांधाना दर्शन, भक्ति, प्रवचन

रात्रि विश्राम चन्देरी

10 दिसम्बर (चौथा दिन)

प्रात:	8.00 बजे	चंदेरी एवं खंदारगिरि दर्शन–पूजन, प्रवचन
	10:45 बजे	थूबौन दर्शन
दोपहर	2:30 बजे	बरौदास्वामी दर्शन (डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली)
	4:30 बजे	सेरौन दर्शन, भक्ति

रात्रि विश्राम पपौराजी

11 दिसम्बर (पाँचवा दिन)

प्रात:	8.00 बजे	पपौरा दर्शन–पूजन
	12:00 बजे	बानपुर दर्शन
	3:30 बजे	देवगढ़ दर्शन,
	7:00 बजे	क्षेत्रपाल दर्शन एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह

रात्रि विश्राम पपौराजी

12 दिसम्बर (छठवाँ दिन)

प्रात:	8:00 बजे	पपौरा दर्शन, पूजन, प्रवचन
	10:15 बजे	आहार दर्शन,
दोपहर	2:30 बजे	खजुराहो दर्शन, भक्ति, प्रवचन
रात्रि	8:00 बजे	डेरापहाड़ी (छतरपुर) दर्शन,

रात्रि विश्राम द्रोणगिरी

13 दिसम्बर (सातवाँ दिन)

प्रात :	9:00 बजे	नैनागिरी दर्शन
	2:30 बजे	कुंडलपुर दर्शन, भक्ति, प्रवचन

रात्रि विश्राम द्रोणगिरी

14 दिसम्बर (आठवाँ दिन)

प्रात:	8:00 बजे	दर्शन–पूजन
	2:30 बजे	समापन एवं तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का नागरिक अभिनन्दन समारोह

एक अभूतपूर्व संस्था : पपि

लेख – परमात्मजी भारिल्ल

ण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

– ३ पेज

एक अभूतपूर्व संस्था : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

लेख – परमात्मजी भारिल्ल – ३ पेज

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 11
तीसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

निगोद भी तिर्यंचगति में ही आता है; जहाँ एक श्वांस में अठारह बार जन्म और अठारह बार मरण होता है। इस जगत में जन्म–मरण का दुःख ही सबसे बड़ा दुःख है; जिसे वे निगोदिया जीव निरन्तर भोगते रहते हैं।

जब हमारी सौ–दो सौ रुपयों की कोई वस्तु खो जाती है तो हमें कितना दुःख होता है; पर मरण तो सम्पूर्ण वस्तुओं का एक साथ खो जाने का नाम है। आप कल्पना कर सकते हैं, उसके अनुपात में सर्वस्व खो जाने पर कितना दुःख होता होगा? यही कारण है कि सभी संसारी जीवों को सबसे बड़ा दुःख मरने का लगता है। यह जीव सबकुछ खोकर भी मरने से बचना चाहता है। जीवन में एक बार मरने के दुःख की अपेक्षा जिसे एक श्वांस में १८ बार मरना पड़ता हो; उसे कितना दुःख होगा ह्न इसे आसानी से समझा जा सकता है। मरण के समान जन्म भी कम कष्टदायक नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि वहाँ तो ज्ञान न के बराबर ही है, एकदम बेहोशी जैसी अवस्था है। बेहोशी में दुःख कैसा?

अरे भाई! ज्ञान का विकास दुःख का कारण थोड़े ही है। ज्ञान का विकास किसी अपेक्षा से सुख का कारण तो हो सकता है; पर दुःख का कारण ज्ञान को मानना तो सबसे बड़ा अज्ञान है। वस्तुतः बात यह है कि ज्ञान के विकास की कमी होने से उसका दुःख प्रगट नहीं हो पाता। प्रगट नहीं हो पाने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि वह दुःखी नहीं है।

निगोदिया जीव वनस्पतिकायिक जीव हैं। निगोदियों के अलावा भी वनस्पतिकायिक जीव होते हैं। पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक एकेन्द्रिय जीव भी तिर्यंचगति में आते हैं। वे भी अनन्त दुःखी ही हैं। इसीप्रकार विकलत्रय (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय) भी तिर्यंच गति में आते हैं।

मन रहित असैनी पंचेन्द्रिय जीव भी तिर्यंचगति में ही हैं। इसप्रकार सबसे अधिक दुःख कहीं है तो वह तिर्यंचगति में ही है।

द्वीन्द्रियादि से असैनी पंचेन्द्रिय तक के जीवों की स्थिति भी लगभग एकेन्द्रिय जैसी ही है। अन्तर मात्र इतना ही है कि उनकी अपेक्षा इनमें ज्ञान का उघाड़ क्रमशः कुछ अधिक हुआ है और बोलने–चालने की भी शक्ति प्रगट हुई है; अतः इनका दुःख कुछ प्रगट दिखाई देता है। इनकी क्रोधादि से लड़ना, मारना, काटना, भागना व अन्नादि का संग्रह करना आदि क्रियायें दिखाई देती हैं। सर्दी–गर्मी, छेदन–भेदन के दुःख तो सभी को हैं ही।

इसप्रकार एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक के जीवों के दुःखों का संक्षिप्त निरूपण करने के उपरान्त अब सैनी पंचेन्द्रिय जीवों के दुःखों की चर्चा चारों गतियों की अपेक्षा करते हैं; क्योंकि एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक के जीव तो सभी तिर्यंचगति के ही हैं।

सैनी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों के दुःखों का वर्णन मोक्षमार्ग–प्रकाशक के अनुसार ही छहढ़ाला में इसप्रकार किया गया है ह्न

सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशू हति खाये भूर।
कबहूँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अति दीन ।।
छेदन–भेदन भूख पियास, भार–वहन हिम–आतप त्रास।
बध–बन्धन आदिक दुःख घने, कोटि जीभतैं जात न भने।।

यदि सैनी तिर्यंच सिंहादिक भी हो गया तो निरन्तर निर्बल पशुओं को मारकर खाता रहता है। यदि कभी स्वयं बलहीन दीन पशु हो गया तो अन्य सबल पशुओं का आहार बन जाता है। छेदन–भेदन, भूख–प्यास, बोझा ढोना और सर्दी–गर्मी के दुःख तो भोगने ही पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त बाँधा जाना, मारा जाना आदि अनेक प्रकार के इतने दुःख होते हैं कि जिनका कथन करोड़ जिव्हाओं से भी नहीं किया जा सकता।

सैनी पंचेन्द्रिय जीव चारों गतियों में पाये जाते हैं। अतः उनके दुःखों का वर्णन गतियों की अपेक्षा किया गया है। गतियों में पाये जाने वाले दुःखों का निरूपण भी पण्डितजी कर्मोदय की अपेक्षा से ही करते हैं।

नारकी जीवों में अपेक्षाकृत ज्ञान का विकास अधिक है; तथापि उनके पंचेन्द्रिय विषयों की इच्छा बहुत है और विषय–सामग्री का पूर्णतः अभाव है; अतः वे अत्यन्त दुःखी हैं। उनके कषायों की तीव्रता अत्यधिक है और उनके कृष्णादि अशुभ लेश्यायें ही होती हैं। इस कारण भी वे बहुत दुःखी हैं।

मोक्षमार्गप्रकाशक में निरूपित नरकगति में जीवों के दुखों का वर्णन छहढ़ाला में पण्डित दौलतरामजी अति संक्षेप में इसप्रकार करते हैं ह्न

तहाँ भूमि परसत दुःख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहिं तिसो।
तहाँ राध–शोणित वाहिनी, कृमि–कुल कलित देह दाहिनी।।
सेमर तरु दल जुत असिपत्र, असि ज्यौं देह विदारैं तत्र।
मेरु–समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।।
तिल–तिल करैं देह के खण्ड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधु–नीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।।
तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुःख बहु सागर लौं सहे, करम–जोग तैं नरगति लहै।।

नरक की भूमि इसप्रकार की होती है कि जिसे छूते ही ऐसी पीड़ा होती है कि जैसी पीड़ा हजार बिच्छुओं के काटने से भी नहीं होती।

वहाँ की खून और पीप से भरी हुई देह को जला देनेवाली भयंकर नदियाँ कीड़े–मकोड़ों से भरी हुई होती है।

सेमर नामक वृक्षों के तरवार की धार के समान पत्ते उनके शरीर को उसीप्रकार चीर देते हैं, जिसप्रकार तलवार शरीर को चीर देती है। सर्दी–गर्मी ऐसी पड़ती है कि यदि मेरु के समान विशाल लोहे का गोला वहाँ डाला जाय तो वह गर्मी से गल जायेगा और सर्दी से क्षार–क्षार हो जायेगा।

असुर जाति के देव जाकर उन्हें परस्पर लड़ाते हैं, जिससे वे परस्पर एक–दूसरे की देह के खण्ड–खण्ड कर डालते हैं।

समुद्रों पानी पी लेने पर भी प्यास न बुझे ह्न ऐसी भयंकर प्यास लगती है, फिर भी पानी की एक भी बूँद प्राप्त नहीं होती। इसीप्रकार तीन लोकों में प्राप्त सम्पूर्ण अनाज खा जावे, तब भी भूख नहीं मिटे ह्न ऐसी भूख लगती है, पर खाने को एक कण भी प्राप्त नहीं होता।

नरकों में इसप्रकार के दुःख अनेक सागरों पर्यन्त भोगने पड़ते हैं।

प्रश्न ह्न अनाज मात्र मध्यलोक में ही पैदा होता है, वहाँ भी सभी जगह नहीं; क्योंकि पृथ्वी के तीन चौथाई भाग में तो पानी ही पानी है। जहाँ जमीन है, वहाँ भी तो सब जगह अनाज पैदा नहीं होता। ऐसी स्थिति में तीन लोक के अनाज को खाने की बात क्या ठीक है?

उत्तर ह्न अरे भाई! अनाज कहाँ–कहाँ पैदा होता है और कहाँ नहीं ह्न यह बात यहाँ नहीं है। यहाँ तो यह बताया जा रहा है जहाँ और जितना अनाज पैदा होता है; यदि वह सभी खा जावे तो भी नारकी को तृप्ति नहीं होगी। ह्न ऐसा कहकर उनकी भूख की भयंकरता का ज्ञान कराया है। **(क्रमशः...)**

2 दिसम्बर 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

पाठकों के पत्र

जैनपथप्रदर्शक (अक्टूबर-द्वितीय-०८) एवं वीतराग-विज्ञान (अक्टूबर-०८) में प्रकाशित समाचार को पढकर **रोहतक (हरियाणा) से डॉ. एस. के. जैन** लिखते हैं ह्न

राष्ट्रसंत सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज द्वारा आप (डॉ.भारिल्ल) को '**समयसार का शिखरपुरुष**' घोषित करने के अवसर पर आपको मेरी तरफ से व हमारी समयसार की दोनों कक्षाओं (पुरुष वर्ग और स्त्री समाज) की तरफ से ढेर सारी बारम्बार बधाई हो, साथ में दीपावली की भी शुभकामनायें स्वीकार करें। समयसार की नई विवेचन शैली ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका की सरलता व स्पष्टता का कोई सानी ही नहीं है। हम हर रोज इसका स्वाध्याय कर रहे हैं, इसमें जम रहे हैं ... रम रहे हैं।

अध्यात्म गंगा प्रतियोगिता का ड्रॉ निकाला

उदयपुर (राज) : यहाँ युवा फैडरेशन शाखा आदर्शनगर गायरियावास, के तत्त्वावधान में आयोजित अध्यात्म गंगा प्रतियोगिता का लक्की ड्रॉ दिनांक 28 सितम्बर 08 को प्रात: 10 बजे गायरियावास स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में समारोहपूर्वक निकाला गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री थे। अध्यक्षता मंदिर के मंत्री श्री दीपचंदजी गाँधी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश संगठन मंत्री पण्डित हेमन्तजी शास्त्री, समाजसेवी दाड़मचंद जैन, भगवतीलाल जैन एवं फैडरेशन शाखाध्यक्ष किशनलाल सेठ थे।

लक्की ड्रॉ में **प्रथमस्थान प्राप्त** 5 विजेता क्रमश: भावेश जैन सेक्टर-5, श्रीमती राजकुमारी गाँधी मुमुक्षु मंडल चैत्यालय, भूपेशकुमार जैन भीण्डर, भावना जैन गायरियावास एवं स्नेहलता जैन नेमीनाथ जैन कॉलोनी थे।

द्वितीयस्थान प्राप्त 5 विजेता क्रमश: शिखा बण्डी से. 11, हेमलता कोठारी गायरियावास, सुलोचना तलेटिया जनकपुरी, जसवंतदेवी सिंघवी से. 11, रोशनदेवी से. 4

तृतीयस्थान प्राप्त 5 विजेता क्रमश: श्रीमती किरण हेमेन्द्र जैन, से.4, बेबी लिखमावत भीण्डर, सुनीता पाडलिया से.4, श्रीमती विमलादेवी से.4, गरीमा जैन मुमुक्षु मंडल।

इनके अलावा अन्य 36 सांत्वना पुरस्कार दिये गये।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

भव्य त्रय शिलान्यास महोत्सव

गुरसराय-झाँसी (उ. प्र.) : यहाँ दिनांक १ से ३ नवम्बर तक भक्तामर महामंडल विधान एवं एक साथ तीन शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न हुये।

महोत्सव में श्री **बीस तीर्थंकर दिगम्बर जिनमंदिर** का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स नई दिल्ली के करकमलों द्वारा, **श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन** का शिलान्यास श्री विजय बहादुर जैन हरपालपुर द्वारा एवं **श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला** का शिलान्यास श्री दिगम्बर जैन समाज रानीपुर द्वारा किया गया। धर्म-ध्वजा को फहराने का सौभाग्य श्री सतीशचंदजी जैन ठेकेदार, ग्वालियर परिवार को मिला।

महोत्सव के मण्डप उद्घाटनकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमार (सट्टा वाले) गुरसराय, मंच उद्घाटनकर्त्ता श्री प्रद्युम्नकुमार जैन रानीपुर एवं श्रीजी विराजमानकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमार जैन घुरैया थे। इस अवसर पर चौ. लक्ष्मीचंद्र, सनतकुमार जैन ने जिनमंदिर निर्माण हेतु 40X60 वर्गफुट जमीन ट्रस्ट को दान देने की घोषणा की।

इस प्रसंग पर पण्डित गुलाबचंदजी जैन बीना, पण्डित रमेशजी इन्दौर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ़ एवं पण्डित केवलचंदजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम बालब्रह्मचारी चंद्रसेनजी त्यागी बीनाकी प्रेरणा से बालब्रह्मचारी पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित कांतिकुमारजी शास्त्री इन्दौर के सहयोग से सम्पन्न हुये।

इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी, मुम्बई का सहयोग

श्री टोडरमल स्मारक भवन में अक्टूबर माह में आयोजित शिविर के अवसर पर इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी पधारी थीं। उन्होंने ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों को देखकर अत्यंत हर्ष व्यक्त किया एवं निम्नप्रकार से सहयोग प्रदान किया है; उनको हार्दिक धन्यवाद !

1. सुरेन्द्रनगर निवासी स्वर्गीय श्रीमती पोतीबेन धनजी भाई दोसी की स्मृति में हस्ते इन्द्राबेन जयन्तिभाई दोसी द्वारा ट्रस्ट के संरक्षक के रूप में 5 लाख रुपया एवं विद्यार्थी गुरुदेवश्री एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि विद्वानों के प्रवचन बड़े पर्दे (स्क्रीन)पर स्पष्ट देख-सुन सकें; एतदर्थ एक टी. वी. प्रोजेक्टर के लिये 51 हजार रुपये सोत्साह प्रदान किये।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127